आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

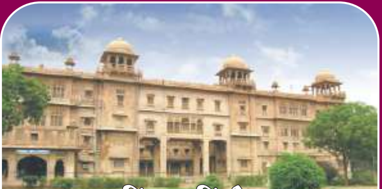

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13 अंक : 4 दिसम्बर, 2025 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

स्वदेशी नस्लों का संरक्षण और संवर्द्धनः आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला

भारत प्राचीनकाल से विविध एवं समृद्ध स्वदेशी पशुधन संसाधनों का धनी रहा है। हमारी स्वदेशी गाय–भैंस नस्लें केवल जैविक संपदा नहीं, बल्कि कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था, ग्रामीण संस्कृति एवं राष्ट्रीय पोषण–सुरक्षा का आधार स्तंभ हैं। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में जब जलवायु परिवर्तन, टिकाऊ कृषि, रोग–नियंत्रण और खाद्य सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ विश्व को प्रभावित कर रही हैं, स्वदेशी नस्लों के संरक्षण एवं वैज्ञानिक संवर्द्धन का महत्व अत्यंत बढ़ गया है। स्वदेशी नस्लों की विशेषता यह है कि वे हमारे प्रदेशों की जलवायु, चारे–पानी की उपलब्धता, क्षेत्रीय रोग दबाव और सामाजिक –आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप विकसित हुई हैं। इन नस्लों में उच्च रोग–प्रतिरोधक क्षमता, ऊष्मा–सहनशीलता, कम इनपुट में संतोषजनक उत्पादन तथा दीर्घायुता जैसे गुण निहित हैं जो इन्हें टिकाऊ पशुपालन प्रणाली का प्रमुख आधार बनाते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में यह उल्लेखनीय है कि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर अपनी अनुसंधान परंपरा एवं समर्पित वैज्ञानिक दृष्टिकोण के माध्यम से स्वदेशी नस्लों के संरक्षण के राष्ट्रीय प्रयासों का नेतृत्व कर रहा है। विश्वविद्यालय के विभिन्न पशु अनुसंधान केंद्रों में स्वदेशी नस्लों जैसे गिर, साहीवाल, राठी, कांकरेज तथा थारपारकर गौवंश के क्षेत्रीय अनुकूलन, शुद्ध नस्ल प्रजनन, जर्मप्लाज्म संरक्षण, उच्च उत्पादकता रेखाओं की पहचान, आधुनिक प्रजनन तकनीकों का उपयोग तथा नस्ल–विशिष्ट स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन पर निरंतर शोध किया जा रहा है। इन केंद्रों के माध्यम से विश्वविद्यालय न केवल संरक्षण कार्य कर रहा है, बल्कि स्वदेशी नस्ल–आधारित वैज्ञानिक मॉडल विकसित कर ग्रामीण पशुपालकों तक पहुंचा भी रहा है, जिससे उत्पादन–वृद्धि, लागत–नियंत्रण और आजीविका–सशक्तिकरण को व्यापक गति मिल रही है। एक पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संस्थान होने के नाते हमारा दायित्व है कि हम इन आनुवंशिक संसाधनों की सुरक्षा करें और आने वाली पीढ़ियों के लिए इन्हें और भी समृद्ध रूप से संरक्षित रखें। विश्वविद्यालय इस दिशा में नस्ल–उन्नयन कार्यक्रमों, किसानों एवं पशुपालकों के प्रशिक्षण, सामुदायिक नस्ल संरक्षण समूहों, क्षेत्रीय नस्ल–मानचित्रण तथा राष्ट्रीय स्तर के सहयोगी अनुसंधान के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। मैं विश्वविद्यालय के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों, विद्यार्थियों, पशुपालकों एवं नीति– निर्माताओं से आह्वान करता हूँ कि वे इस राष्ट्रीय कार्य को और सशक्त बनाने में सहभागिता करें। स्वदेशी नस्लों का संरक्षण केवल एक वैज्ञानिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरदर्शी कदम है। निश्चित रूप से जब विज्ञान, परंपरा, नवाचार और समाज एक साथ आगे बढ़ते हैं तब राष्ट्र अपने पशुधन क्षेत्र में न केवल आत्मनिर्भर होता है, बल्कि वैश्विक मंच पर नेतृत्व स्थापित करने की क्षमता भी प्राप्त करता है।

डॉ. सुमंत व्यास

कुलगरु डॉ. सुमंत व्यास की राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास की राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट

वेटरनरी विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने 6 नवम्बर को राजस्थान के राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ बागड़े से शिष्टाचार भेंट की एवं विश्वविद्यालय की पशुचिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा, प्रसार एवं अनुसंधान प्रगति से अवगत करवाया। इस अवसर पर कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागड़े को विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों के लिए आयोजित किये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों, नवीन अनुसंधान के साथ–साथ विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति एवं भविष्य की कार्य योजनाओं के बारे में बताया।

किसानों एवं पशुपालकों ने देखा पी.एम. किसान सम्मान निधि योजना का सीधा प्रसारण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में 19 नवम्बर को किसानों एवं पशुपालकों ने माननीय प्रधानमंत्री की "पी.एम. किसान सम्मान निधि योजना" के ऑनलाइन कार्यक्रम के सीधा प्रसारण को देखा। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किसान सम्मान निधि योजना की 21वीं किस्त को कोयंबत्तूर, तमिलनाडु से डी.बी.टी. के जरिए किसानों के बैंक खातो में सीधा हस्तांतरण किया गया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने इसके साथ–साथ कौशल विकास के माध्यम से पशुपालन व्यवसाय को आर्थिक लाभकारी बनाने हेतु प्रेरित किया। इस दौरान कुलगुरु डॉ. व्यास ने पशुपालकों को राजुवास मिनरल मिक्सचर पैकेट का वितरण भी किया। इस दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि कार्यक्रम में गांव कतरियासर, बम्बलु, पेमासर एवं खारा से पधारे किसान–पशुपालकों ने कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा और सुना।

कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत सात दिवसीय बकरी पालन उद्यमिता प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 26 नवम्बर से 02 दिसम्बर तक सात दिवसीय बकरी पालन उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 26 नवम्बर को किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पशुपालकों में उद्यमशीलता तथा पशुपालन से आर्थिक उत्थान हेतु विश्वविद्यालय द्वारा कौशल विकास कार्यक्रम की पहल की गई जिसमें राज्य के विभिन्न जिलों से इच्छुक प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार अपना सके। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बकरी पालन के क्षेत्र में बुनियादी जानकारी प्रदान करते हुए कार्यक्रम का विस्तृत विवरण बताया। उद्घाटन सत्र के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव पंकज शर्मा, अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. हेमन्त दाधीच ने भी प्रशिक्षर्णियों को सम्बोधित किया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. मोहन लाल चौधरी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में बीकानेर, हनुमानगढ़, पाली, बासंवाड़ा उदयपुर, चूरू, सिरोही, ब्यावर चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर जिलो के पशुपालक प्रशिक्षण ले रहे है।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्रबन्धन एवं निस्तारण पर स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का प्रशिक्षण

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के स्नातकोत्तर छात्र–छात्राओं को पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर 26 व 27 नवम्बर को एक दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कुलगुरु, राजुवास डॉ. सुमंत व्यास, ने कहा कि छात्र–छात्राओं में जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित निस्तारण एवं प्रबंधन के प्रति जागरूकता होना अत्यंत आवश्यक है। कुलगुरु डॉ. व्यास ने आह्वान किया कि विद्यार्थियों को यह प्रशिक्षण लेकर आगे से आगे इस अपशिष्ट से जुड़े लोगो को उचित निस्तारण के लिए जागरूक करना चाहिए ताकि मनुष्यों, पशुओं व वातावरण को अपशिष्ट के दुष्प्रभावों से बचाया जा सके। केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने केंद्र की विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तार से अवगत करवाया। डॉ. देवेंद्र चौधरी, डॉ. वैशाली तथा डॉ. हेमलता ने प्रशिक्षणार्थियों को जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित निस्तारण के नियम और विनियम के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

फील्ड पशुचिकित्सकों का पशुओं में आर्थोपेडिक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग द्वारा फील्ड पशुचिकित्सकों के लिए बड़े जानवरों की हड्डी व जोड़ों से सम्बंधित विकारों के निदान व प्रबंधन हेतु 10–12 नवम्बर तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कुलगुरु राजुवास, बीकानेर डॉ. सुमंत व्यास ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को महाविद्यालय के शल्य चिकित्सा विभाग के गौरवशाली इतिहास एवं पशुचिकित्सा क्षेत्र में विभाग के उल्लेखनीय योगदान की जानकारी प्रदान की। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने बताया कि वेटरनरी महाविद्यालय के शल्य चिकित्सा विभाग के पूर्व आचार्यो का वेटरनरी शल्य चिकित्सा क्षेत्र में बीकानेर ही नहीं अपितु देश के अन्य विश्वविद्यालयों में भी अभूतपूर्व योगदान है। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने प्रशिक्षणार्थियों को इस प्रशिक्षण एवं अर्जित कौशल ज्ञान को फिल्ड में पशुपालकों के हितार्थ उपयोग करने हेतु प्रेरित किया। अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच तथा निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित किया। निदेशक क्लीनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई एवं प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. अनिल बिश्नोई ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के 8 राज्यों के 21 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे है जिनमें एक प्रशिक्षणार्थी नेपाल से भी है तथा यह कार्यक्रम भारतीय कृषि अनुसंधान, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित प्रोजेक्ट ए.आई.एन.पी. डिमिस्का के अन्तर्गत आयोजित करवाया जा रहा है।

वेटरनरी विद्यार्थियों हेतु उद्यमशीलता विकास पर संवेदीकरण कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 21 नवम्बर को विद्यार्थियों हेतु "पशुचिकित्सा में उद्यमिता विकास" विषय पर संवेदीकरण कार्यक्रम का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने बताया की वर्तमान परिपेक्ष्य में पशुचिकित्सा विज्ञान के रोजगारोन्मुखी के विभिन्न पहलुओं को समझना विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ताकि विद्यार्थी पारंपरिक पशुचिकित्सा रोजगार के अतिरिक्त उद्यमिता के नवीन स्त्रोत (स्टार्ट–अप) विकसित कर सकें। कूलगुरू डॉ. व्यास ने बताया की भारत के पशुओं की बढ़ती जनसंख्या, पशुओं में हेल्थकेयर की बढ़ती मांग और आमजन में डेयरी प्रोडक्ट्स की बढ़ती पसंद की वजह से पशुचिकित्सा एवं पशुपालन के क्षेत्र में एंटरप्रेन्योरशीप का विकास तेजी से बढ़ रहा है। राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी, हैदराबाद के निदेशक डॉ. गोपाल लाल ने संस्थान की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि कार्यक्रम में डेयरी, पोल्ट्री, फीड़ व फार्मासूटीकल के बढ़ने के साथ वेटरनरी सेक्टर मे स्वरोजगार के लिए कई अवसर है। वेटरनरी विद्यार्थियों को कोर्स से करियर और नौकरी ढूढ़ने वालो की जगह नौकरी देने वालो की तरफ प्रेरित होना चाहिये। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. विजय अविनाशिलिंगम ने विद्यार्थियों को शिक्षा में उद्यमशीलता की मानसिकता को बढावा देना विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान दिया। इस दौरान विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर व उदयपुर के अंतिम वर्ष के स्नातक, इर्न्टन, स्नातकोत्तर एवं पी.एच.डी. विद्यार्थी प्रतिभागी रहे।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

कृषि विज्ञान केन्द्र, हनुमानगढ़–II (नोहर) की 12वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन दिनांक 7 नवम्बर, 2025 को कुलगुरू डॉ. सुमंत व्यास (ऑनलाइन) की अध्यक्षता में कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रशिक्षण हॉल में आयोजित की गई। इस अवसर पर कुलगुरू डॉ. सुमत व्यास ने कहा कि गौ आधारित प्राकृतिक खेती से किसानों को आत्मनिर्भर बनाए तथा पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर से आने वाली गोबर खाद् की मात्रा का निर्धारण करने साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र पर प्शुपालन आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देने पर कहा। बैठक में डॉ. जे.पी. मिश्रा, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–अटारी, जोधपुर (ऑनलाइन) ने केवीके में केन्द्र की भूमिका को वैज्ञानिक तकनीकी वितरण केन्द्र के रूप में सशक्त करते हुए आदान वितरण प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर तथा डॉ. एन.के. शर्मा, क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर उपस्थित रहें। बैठक में डॉ. सुभाष डूडी, उपनिदेशक आत्मा परियोजना, हनुमानगढ़, श्री दीपचंद बेनीवाल, जिला परिषद, सदस्य हनुमानगढ़श्रीमती रेवती देवी प्रगतिशील महिला किसान, नोहर सहित कई गणमान्य सदस्य उपस्थित रहें।

विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरूकता पर कार्यशाला

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के पशु चिकित्सा सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग द्वारा विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एन्टी. माइक्रोबियल रजिस्टेंस) जागरूकता सप्ताह–2025 के अवसर पर आई.सी. ए.आर.इन्फार परियोजना के अन्तर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलगुरु राजुवास, बीकानेर डॉ. सुमंत व्यास ने एएमआर को बढ़ावा देने वाले कारणों, प्रयोगशाला निदान की अनिवार्यता, सही खुराक निर्धारण तथा वैज्ञानिक आधार पर उपचार चयन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर, डॉ. संजय शर्मा, निदेशक अनुसंधान, प्रो. बी.एन. श्रृंगी परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. राजेश सिंघाटिया द्वारा विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरूकता कार्यक्रमों और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। कार्यशाला में बीकानेर जिले के कुल 26 पशु चिकित्सा अधिकारियों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर में रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरूकता कार्यक्रम

विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध (ए.एम.आर.) जागरूकता सप्ताह 2025 के अंतर्गत पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरनसर में आई.सी.ए.आर. इन्फार परियोजना तहत जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को बढ़ते रोगाणुरोधी प्रतिरोध के खतरे के प्रति जागरूक करना एवं एंटीबायोटिक के विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना था। शिविर में कुल 50 पशुपालकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरनसर के प्रभारी अधिकारी डॉ. दिवाकर तथा डॉ. फेमिना अंजुम ने पशुपालकों को संबोधित करते हुए एंटीबायोटिक के अनावश्यक एवं अत्यधिक उपयोग को रोकने की आवश्यकता पर बल दिया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 17 एवं 19 नवम्बर को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 29 नवम्बर को गांव फूलदेसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 112 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 6–7, 19 एवं 29 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 136 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 19 नवम्बर को गांव रामसीन में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 22 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 12 एवं 26 नवम्बर को गांव खेरवाड तथा नेजपुर में तथा दिनांक 19 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 83 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा 4, 7, 10, 11, 15,, 17, 18, 24 एवं 29 नवम्बर को गांव ढाणी पांचेरा, रड़वा, लंबोर चिंपियान, तारानगर, लुटानापुरन, कांदरन, टिडियास, पांडुसर एवं जैतसीसर गांवों में तथा 19 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 229 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा 10 एवं 17 सितम्बर को गांव सेमलिया एवं सेगवा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 64 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा दिनांक 7 एवं 10 नवम्बर को गांव मांडवा एवं पालडी गांवो में तथा दिनांक 19 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 95 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 6 एवं 18 नवम्बर को गांव खांगडा एवं भाटीयों की ढाणी में तथा दिनांक 19 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 12–15 एवं 21–27 नवम्बर को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 25 नवम्बर को गांव परलिका में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 97 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुधनः ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लाखों किसान परिवारों के लिए पशुपालन न केवल आजीविका का साधन है, बल्कि यह उनकी आर्थिक सुरक्षा का आधार भी है। पशुधन क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो 2022–23 तक कुल राष्ट्रीय सकल मूल्य वर्धित (GVA) में लगभग 5.50 प्रतिशत और कृषि तथा संबद्ध क्षेत्रों के कुल GVA में 30 प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है। यह हिस्सेदारी लगातार बढ़ती प्रवृत्ति दर्शाती है, जो इस क्षेत्र के बढ़ते महत्व को उजागर करती है।

आर्थिक सुरक्षा का आधारः पशुधन क्षेत्र आर्थिक विकास में योगदान देता है, जिसकी चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) 2014–15 से 2022–23 तक 12.99 प्रतिशत रही है। ग्रामीण परिवारों के लिए पशुधन एक जीवित बैंक की तरह काम करता है। जब फसलें खराब हो जाती हैं या आर्थिक संकट आता है, तो दूध, अंडे और अन्य पशु उत्पादों की बिक्री से नियमित आय मिलती रहती है। यह आय परिवार को कठिन समय में भी स्थिर रखती है। गाय, भैंस, बकरी और मुर्गी पालन से किसानों को दैनिक आय का स्रोत मिलता है। एक दूध देने वाली गाय या भैंस महीने में 10,000 से 15,000 रुपये तक की आय दे सकती है, जो कई छोटे किसान परिवारों के लिए प्रमुख आय स्रोत होती है।

रोजगार के अवसरः भारत पशुधन उत्पादन में वैश्विक अग्रणी है, दूध उत्पादन में पहले स्थान पर और अंडा तथा मांस उत्पादन में क्रमशः दूसरे और पांचवें स्थान पर है। यह क्षेत्र लाखों ग्रामीण परिवारों को आजीविका प्रदान करता है, रोजगार देता है और दूध, मांस और अंडे जैसे उत्पादों के माध्यम से खाद्य और पोषण सुरक्षा में योगदान देता है। इसके अतिरिक्त यह जैविक खाद और स्वच्छ ऊर्जा के संभावित स्रोत प्रदान करके ग्रामीण स्थिरता का समर्थन करता है।पशुपालन क्षेत्र करोड़ों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है। चरवाहे, पशु चिकित्सक, दूध विक्रेता, चारा व्यापारी और डेयरी उद्योग से जुड़े लोग इसी क्षेत्र पर निर्भर हैं। महिलाओं के लिए भी पशुपालन आय का एक सशक्त माध्यम बन गया है, क्योंकि वे घर पर रहकर ही पशुओं की देखभाल कर सकती हैं।

कृषि में सहयोगः पशु केवल दूध और मांस के लिए ही नहीं पाले जाते। वे कृषि कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बैल आज भी कई क्षेत्रों में हल चलाने और बोझा ढोने का काम करते हैं। इसके अलावा, पशुओं का गोबर उत्तम जैविक खाद प्रदान करता है, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है और रासायनिक खादों पर निर्भरता कम करता है। गोबर से बायोगैस भी बनाई जाती है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में खाना पकाने के लिए स्वच्छ ऊर्जा का स्रोत है। इससे जंगलों पर दबाव कम होता है और पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलती है।

पोषण सुरक्षाः दूध, अंडे और मांस प्रोटीन, कैल्शियम और अन्य आवश्यक पोषक तत्वों के प्रमुख स्रोत हैं। ग्रामीण परिवारों, विशेषकर बच्चों और महिलाओं के लिए, पशु उत्पाद कुपोषण से लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वयं के पशु होने से परिवार को ताजा और पौष्टिक भोजन सुलभ हो जाता है।

सामाजिक प्रतिष्ठाः भारतीय ग्रामीण समाज में पशुधन सामाजिक प्रतिष्ठा का भी प्रतीक रहा है। अधिक पशु रखने वाले किसानों को समृद्ध माना जाता है। शादी–ब्याह और अन्य सामाजिक अवसरों पर पशुओं का आदान–प्रदान भी होता है।

चुनौतियां और समाधानः हालांकि पशुपालन में कई चुनौतियां भी हैं। पशु रोग, चारे की कमी, अच्छी नस्लों की अनुपलब्धता और बाजार तक पहुंच की समस्याएं प्रमुख हैं। सरकार और गैर–सरकारी संगठन इन समस्याओं के समाधान के लिए काम कर रहे हैं। पशु टीकाकरण कार्यक्रम, कृत्रिम गर्भाधान सुविधाएं, पशु बीमा योजनाएं और डेयरी सहकारी समितियां इस दिशा में सकारात्मक कदम हैं। किसान क्रेडिट कार्ड योजना के तहत पशुपालन के लिए भी ऋण उपलब्ध है।

भविष्य की संभावनाएंः बढ़ती जनसंख्या और दूध एवं मांस की बढ़ती मांग के साथ, पशुपालन क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। आधुनिक तकनीक, बेहतर नस्लों और वैज्ञानिक प्रबंधन से इस क्षेत्र में और अधिक विकास हो सकता है। डेयरी उद्योग का विकास, प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना और निर्यात के अवसर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयां दे सकते हैं। युवाओं को भी पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

निष्कर्षः पशुधन वास्तव में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि रोजगार, पोषण और सामाजिक स्थिरता में भी योगदान देता है। सरकारी नीतियों, तकनीकी सहायता और किसानों की मेहनत के साथ, पशुपालन क्षेत्र भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को और मजबूत बना सकता है। हमें इस क्षेत्र में निवेश बढ़ाने और पशुपालकों को हर संभव सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है।

डॉ. चेतना महाजन
सहायक आचार्य, कॉलेज ऑफ वेटरनरी साइंस, रामपुरा फूल, बठिंडा
एवं डॉ. अभिषेक गुप्ता
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

गौवंश में अल्पकालिक बुखार भी हो सकता है नुकसानदायक

गौवंश में अल्पकालिक बुखार ज्वर जिसे आमतौर पर ''तीन दिवसीय बीमारी'' के नाम से जाना जाता है, मवेशियों और भैंसों में पाया जाने वाला एक कीट–जनित, गैर–संक्रामक वायरल रोग है। यह रोग अफ्रीका, मध्य पूर्व, ऑस्ट्रेलिया और एशिया के कई क्षेत्रों में व्यापक रूप से देखा जाता है। पशुओं के अलावा भैंस, हिरण, वाइल्डबीस्ट, वाटरबक और संभवतः भेड और बकरी में भी अप्रत्यक्ष संक्रमण दर्ज किया गया है। वायरस फैलाने वाले कीड़ों द्वारा काटे जाने पर तीन दिवसीय बीमारी के लक्षण तेजी से बढ़ते हैं। पशुओं को बहुत तेज बुखार हो जाता है वे उदास, सुस्त दिखाई देते हैं, खाना खाने से कतराते हैं और चलते समय अक्सर लंगड़ा और अकड़न महसूस करते हैं। नाक से पानी आना और लार टपकना भी आम है। सभी नस्लों के पशु इस रोग के प्रति संवेदनशील होते हैं लेकिन 6 महीने से 2 वर्ष आयु के पशुओं में संक्रमण का जोखिम अधिक पाया जाता हैं।

कारण :

इस रोग का कारक विषाणु बोवाइन इफेमेरल फीवर वायरस है, जिसे रैबडोविरिडे परिवार और इफेमेरो वायरस वंश के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। यह वायरस गोली या शंकु के आकार का होता है तथा इसके रासायनिक एवं भौतिक गुण वेसिकुलर स्टोमेटाइटिस वायरस से मिलते–जुलते हैं। यह रोग हेमेटोफैगस कीटों द्वारा फैलता है। मुख्य रूप सेसिराटोपोगोनिडी परिवार की सेन्ड मक्खी द्वारा प्रसारित होता है तथा हाल के अध्ययनों में मॅक्यूलेक्स और क्यूलिकोइड्स मच्छरों की भी संभावित भूमिका पाई गई है। इसका भौगोलिक वितरण मुख्यतः उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और गर्म समशीतोष्ण स्वरूप मौसमी है, जिसका प्रकोप बसंत ऋतु के अंत से शरद ऋतु तक होता है, हालाँकि इसके मामले नवंबर के अंत से जून की शुरुआत तक भी यह रोग होने की संभावना रहती है।

गोजातीय अल्पकालिक बुखार के लक्षण :

❖ शरीर का तापमान अचानक बढ़कर 41^{0}सेन्टी ग्रेड तक पहुँच जाना, जिससे तेज बुखार की अवस्था उत्पन्न होती है।
❖ नाक से चिपचिपा, तार–जैसा स्त्राव निकलना तथा मुँह से अत्यधिक लार का टपकना।
❖ आँखों में अत्यधिक नमी का होना।
❖ पशुओं का खाना–पीना अचानक बंद हो जाना या भूख में तीव्र कमी।
❖ पूरे शरीर में कंपकंपी या मांसपेशियों में थरथराहट महसूस होना।
❖ चलने में असहजता एवं लंगड़ापन जो प्रायः संक्रमण के दूसरे दिन से स्पष्ट दिखाई देता है।
❖ पशु का लंबे समय तक जमीन पर पड़े रहना और चलने–फिरने से इंकार करना, क्योंकि जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द रहता है।

❖ जोड़ों या जबड़े के आसपास सूजन और एडिमा होना।
❖ दूध देने वाले पशुओं में दूध उत्पादन में एकदम तेज और गंभीर कमी, जो आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण नुकसान का कारण बनती है।

उपचार :

इस रोग का कोई विशिष्ट उपचार उपलब्ध नहीं है, केवल लक्षणात्मक चिकित्सा लागू की जा सकती है। दर्द और बुखार कम करने हेतु फेनिलब्यूटाजोन 48 mg/kg (I/V) दिया जा सकता है। तरल पदार्थों और दवाओं की अत्यधिक मात्रा से बचना चाहिए। द्वितीयक जीवाणु संक्रमण रोकने के लिए टेट्रासाइक्लिन 5–10 mg/kg (IV) या एनरोफ्लोक्सासिन 5 mg/kg (I/V) तथा बी–कॉम्प्लेक्स विटामिन का प्रयोग लाभकारी है। लंबे समय तक लेटे रहने वाले पशुओं में कैल्शियम बोरो–ग्लूकोनेट लगाना चाहिए ।

रोग के प्रभाव कम करने के उपाय :

❖ प्रभावित पशुओं के लिए छाया और ठंडे–ताजे पानी की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करें ताकि निर्जलीकरण से बचाव हो सके।
❖ उच्च गुणवता वाले चारे जैसे ल्यूसर्न घास का सेवन कराएँ जिससे पोषण बना रहे।
❖ पशुओं की खुराक और पानी अलग से व्यवस्थित करें तथा उन्हें मुलायम बिस्तर वाले सुरक्षित स्थान पर रखें।
❖ यदि पशु लंबे समय तक लेटा रहे, तौ दिन में 1–2 बार उठाकर टहलाएँ ताकि नसों और मांसपेशियों पर दबाव न पड़े।
❖ सूजनरोधी दवाओं और कैल्शियम इंजेक्शन की आवश्यकता के बारे में पशु चिकित्सक से परामर्श लें व प्रारंभिक अवस्था में यह अधिक प्रभावी होता है।
❖ बड़े मूल्यवान पशुओं एवं गर्भवती गायों में उपचार देते समय पशु की सुरक्षा, दूरी, तापमान और व्यवहार का ध्यान रखें।
❖ कीट नियंत्रण द्वारा मच्छर और रेत–मक्खी के काटने से सुरक्षा प्रदान करें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

मीट प्रोसेसिंग एवं सुरक्षा पहलुः सुरक्षित भोजन की दिशा में एक आवश्यक कदम

आज के समय में मांस प्रोटीन का एक प्रमुख स्रोत बन चुका है। बदलती जीवनशैली और बढ़ती जनसंख्या के कारण मांस की मांग निरंतर बढ़ रही है, परंतु इसके साथ ही मांस प्रसंस्करण और उससे जुड़ी सुरक्षा की महत्ता भी उतनी ही तेजी से बढ़ी है। यदि मांस का सही ढंग से प्रसंस्करण और संरक्षण न किया जाए तो यह न केवल गुणवत्ताहीन हो जाता है बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा भी पैदा कर सकता है। मीट प्रोसेसिंग का अर्थ ताजे मांस को वैज्ञानिक तरीकों से इस प्रकार संसाधित करना है कि उसकी गुणवत्ता बनी रहे, शेल्फ लाइफ बढ़े तथा उपभोक्ता को सुरक्षित और पौष्टिक उत्पाद मिले। इसमें सफाई, कटिंग, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, स्टोरेज और परिवहन जैसे कई चरण शामिल होते हैं। इन सभी चरणों में स्वच्छता और गुणवत्ता नियंत्रण का विशेष ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है। मांस सुरक्षा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण पहलू है स्वच्छता। वधस्थल से लेकर बाजार तक प्रत्येक चरण में साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। संक्रमित पशुओं का मांस उपयोग में नहीं लाया जाना चाहिए। इसके लिए पशु स्वास्थ्य जांच और मांस निरीक्षण व्यवस्था को मजबूत किया जाना चाहिए। मांस को संभालने वाले कर्मियों को स्वच्छता संबंधी प्रशिक्षण तथा सुरक्षात्मक वस्त्रों का उपयोग अनिवार्य रूप से कराया जाना चाहिए। मांस में सूक्ष्मजीवों की वृद्धि बहुत तेजी से होती है, इसलिए तापमान नियंत्रण एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। ताजा मांस सामान्य तापमान पर जल्दी खराब हो जाता है अतः इसे शीघ्रता से ठंडा करना और कोल्ड स्टोरेज में रखना आवश्यक होता है। कोल्ड चेन सिस्टम के माध्यम से उत्पादन स्थल से उपभोक्ता तक मांस को सुरक्षित तापमान पर पहुंचाना आज की आधुनिक आवश्यकता बन गया है। एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है प्रसंस्करण के दौरान क्रॉस–कंटैमिनेशन से बचाव। कच्चे और पके मांस को अलग–अलग संभालना चाहिए। उपकरणों और सतहों की नियमित सफाई एवं कीटाणु रहितकरण अनिवार्य है। साथ ही पानी की गुणवत्ता भी जांची जानी चाहिए, क्योंकि दूषित जल से मांस शीघ्र संक्रमित हो सकता है। पैकेजिंग भी मांस सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है। आधुनिक पैकेजिंग तकनीकें जैसे वैक्यूम पैकिंग और मॉडिफाइड एटमॉस्फियर पैकेजिंग मांस की गुणवत्ता को लंबे समय तक बनाए रखने में सहायक होती हैं। सही पैकेजिंग से मांस में बैक्टीरिया की वृद्धि कम होती है और ऑक्सीकरण की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। इसके अतिरिक्त खाद्य सुरक्षा मानकों एवं नियमों का पालन भी अत्यंत आवश्यक है। सरकार द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार कार्य करने से उपभोक्ता को सुरक्षित भोजन प्राप्त होता है और उद्योग को विश्वसनीयता मिलती है। आज उपभोक्ता भी जागरूक हो रहा है और वह गुणवत्ता एवं सुरक्षा को प्राथमिकता देता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि मांस प्रसंस्करण केवल एक औद्योगिक प्रक्रिया नहीं बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ा विषय है। सुरक्षित मीट प्रोसेसिंग न केवल उपभोक्ताओं को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि राष्ट्रीय पोषण सुरक्षा को भी सुदृढ़ करता है। यदि हम वैज्ञानिक तरीकों, आधुनिक तकनीकों और सुरक्षा मानकों को अपनाएं तो निश्चय ही मांस उद्योग को एक सुरक्षित, स्वच्छ और टिकाऊ रूप प्रदान किया जा सकता है।

डॉ. नितिन कुमार एवं डॉ. वैशाली
सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

सफलता की कहानी

पशुपालन व जैविक खेती में राजुदास स्वामी को मिली नई पहचान

वर्तमान में पशुपालन एवं कृषि में समय के अनुसार नई तकनीकी अपनाने की जरूरत है, क्योंकि कृषि के साथ–साथ पशुपालन को अपनाकर किसान अपनी आय दुगुनी कर सकता है। इसका उदाहरण बने है चक 264 आर.डी., तहसील लूनकरणसर जिला बीकानेर के राजुदास स्वामी, जिन्होनें वैज्ञानिक पशुपालन व नवीन तकनीको का उपयोग कर पशुधन उत्पादन को बढ़ाने में सफलता पाई है। राजुदास पहले घर की जरूरतों के अनुसार ही पशुपालन करते थे लेकिन परिवार में बढ़ते खर्चो के कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी। इस परिस्थिति में उन्होनें खेती के साथ–साथ पशुपालन पर विशेष ध्यान देना शुरू किया। राजुदास पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से तथा पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विशेषज्ञों से सम्पर्क कर दुग्ध उत्पादों जैसे पनीर, मावा, दही इत्यादि को घर पर तैयार कर बाजार में बेचना शुरू किया। साथ ही इन्होनें खनिज लवणों की उपयोगिता, कृमिनाशक दवाओं का महत्व, टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधान, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, संतुलित पशु आहार आदि के महत्व को समझकर तथा इसका प्रयोग कर अपनी आय को बढ़ाया तथा जैविक खेती अपनाकर अच्छा उत्पादन प्राप्त किया। वर्तमान में राजुदास के पास 30 बीघा सिंचित कृषि भूमि है, जिसमें 10 बीघा भूमि में पशुओं के लिए हरा चारा तैयार करते है। राजुदास के पास वर्तमान में 13 राठी गाय, 3 साहीवाल गाय तथा 5 मुर्रा नस्ल की भैंसे है। राजुदास पशुधन से लगभग 110–130 लीटर दुग्ध प्रतिदिन प्राप्त करता है, जिसे बेचकर लगभग 50–70 हजार रूपये प्रति माह की आय प्राप्त कर लेता है। राजुदास ने पशुओं से मिलने वाली गोबर खाद् से वर्मीकम्पोस्ट बनाकर खेत में उपयोग करते है। पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में नेपियर घास, अजोला घास भी लगाई हुई है। प्रगतिशील राजुदास स्वामी ने अपनी सफलता का श्रेय परिवार और पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर को देता है जिससे आज खेती के साथ–साथ पशुपालन में काफी आय प्राप्त करता है।

सम्पर्कः राजुदास स्वामी
चक 264, आर.डी., लूनकरणसर (मो. 9772816873)

निदेशक की कलम से...

मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरणः एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता

आज का युग विज्ञान, तकनीक और वैश्विक संपर्क के तीव्र विकास का समय है। दुनिया पहले की तुलना में कहीं अधिक आपस में जुड़ी हुई है। लेकिन इस वैश्वीकरण और प्रगति के साथ नए स्वास्थ्य संकट भी उभर कर सामने आए हैं। विशेषकर पिछले कुछ दशकों में यह स्पष्ट हुआ है कि मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण तीनों एक–दूसरे से अलग नहीं बल्कि गहराई से जुड़े हुए हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में वन हेल्थ की अवधारणा एक समग्र और प्रभावी दृष्टिकोण के रूप में उभर रही है जिसका उद्देश्य इन तीनों आयामों के बीच संतुलन स्थापित कर समाज को सुरक्षित रखना है। जूनोटिक रोग वे रोग हैं जो पशुओं से मनुष्यों में और मनुष्यों से पशुओं में फैल सकते हैं। विश्व स्तर पर पाए जाने वाले लगभग 60 प्रतिशत संक्रामक रोग जूनोटिक प्रकृति के हैं। इनमें एवियन इन्फ्लुएंजा, रेबीज, ब्रुसोलिस, निपाह वायरस, इबोला तथा हाल के वर्षों में उभरे अनेक नए वायरस जनित रोग शामिल हैं। इन रोगों का सीधा संबंध उन पशुओं जैसे गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर और मुर्गियाँ से हैं जो हमारे भोजन सुरक्षा तंत्र का महत्वपूर्ण आधार बनाते हैं। ये पशु न केवल दूध, मांस और अंडों के माध्यम से पोषण प्रदान करते हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषक आय और सामाजिक संरचना को मजबूत करने का भी महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। लेकिन यदि पशुओं के स्वास्थ्य की अनदेखी की जाए या पारंपरिक गैर–वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन किया जाए तो इससे न केवल पशु उत्पादकता घटती है, बल्कि जन स्वास्थ्य पर भी गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। अतः सुरक्षित, स्वच्छ तथा वैज्ञानिक पशुपालन पद्धतियों को अपनाना समय की माँग बन चुका है। वन हेल्थ की अवधारणा यह संदेश देती है कि यदि हम पशु स्वास्थ्य में निवेश करते हैं तो हम मानव स्वास्थ्य की रक्षा स्वतः कर लेते हैं। समय पर टीकाकरण, रोगों की रोकथाम, स्वच्छ आवास, पोषक चारा, उचित प्रबंधन तथा त्वरित निदान ये सभी कार्य न केवल उत्पादन क्षमता बढ़ाते हैं बल्कि रोगों के प्रसार को भी नियंत्रित करते हैं। साथ ही पर्यावरण का संरक्षण जैसे स्वच्छ जल, शुद्ध हवा और जैव विविधता की रक्षा इस श्रृंखला की एक अनिवार्य कड़ी है। आज आवश्यकता इस बात की है कि पशु चिकित्सक, मानव चिकित्सक, पर्यावरण वैज्ञानिक, कृषि विशेषज्ञ तथा नीति निर्माता एक साझा मंच पर आकर समन्वित प्रयास करें। बहु–विषयक सहयोग ही जूनोटिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण का सबसे प्रभावी मार्ग है। इसके साथ ही जन–जागरूकता, किसान–पशुपालक प्रशिक्षण, स्कूल, कॉलेज स्तर पर शैक्षिक कार्यक्रम, अनुसंधान और आधुनिक तकनीक का उपयोग इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हमें यह समझना होगा कि स्वस्थ पशु ही स्वस्थ समाज की नींव हैं और सुरक्षित खाद्य पदार्थ ही एक शक्तिशाली एवं रोग–मुक्त राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला हैं। यदि हम आज पशु स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य और पर्यावरणीय संरक्षण के इस त्रिकोण को समझकर ठोस कदम उठाते हैं, तो आने वाली पीढ़ियों को हम न केवल एक बेहतर स्वास्थ्य प्रणाली बल्कि एक सुरक्षित और स्थायी खाद्य आपूर्ति भी दे सकेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे वैज्ञानिक, शिक्षक, विद्यार्थी, किसान और पशुपालक मिलकर इस दिशा में कार्य करेंगे और वन हेल्थ के लक्ष्य को वास्तविकता में बदलने में अपना अमूल्य योगदान देंगे।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
संपादक
डॉ. संजय सिंह
डॉ. वैशाली
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया